SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
VOL. 3, ISSUE 5, NOVEMBER 2025
Available Online : http://shodhprakashan.in/

योग के संदर्भ मे गुरु शिष्य परंपरा एवं महत्व

निगम देवी[1] हेमन्त कुमार कोरी[2] परमेश्वरप्पा एस. ब्याडगी[3] सुनन्दा आर. पेढेकर[4]

[1]शोधार्थी, विकृति विज्ञान विभाग, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ. प्र.) ईमेल - nigamsaini1998@gmail.com

[2]शोधार्थी, कायचिकित्सा विभाग, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ. प्र.) ईमेल - hk75785@gmail.com

[3]प्रोफेसर, विकृति विज्ञान विभाग, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ. प्र.) ईमेल - psbyadgi@bhu.ac.in:psbyadgi@gmail.com

[4]प्रोफेसर, कायचिकित्सा विभाग, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ. प्र.) ईमेल - drsrpedhekar@gmail.com

अनुरूपी लेखक - हेमन्त कुमार कोरी, शोधार्थी, कायचिकित्सा विभाग, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ. प्र.) ईमैल - hk75785@gmail.com

सारांश

'बिना व्यवधान के शृंखला रूप में जारी रहना' ही परंपरा कहलाता है । परम्परा-प्रणाली में किसी विषय या उपविषय का ज्ञान बिना किसी परिवर्तन के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ियों में संचारित होता रहता है। इसी का एक पहलु है गुरु शिष्य परंपरा । गुरु शब्द दो अक्षर से मिलकर बना है गु' शब्द का अर्थ है अंधकार (अज्ञान) और 'रु' शब्द का अर्थ है प्रकाश ज्ञान। अज्ञान को नष्ट करने वाला जो ब्रह्म रूप प्रकाश है, वह गुरु है। **शिष्य** एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है "विद्यार्थी" या "शिक्षार्थी"। शिष्य वह व्यक्ति होता है जो किसी गुरु या शिक्षक से ज्ञान, शिक्षा या दीक्षा प्राप्त करने के लिए उनके मार्गदर्शन में रहता है। **भारतीय ज्ञान प्रणाली** भारत की प्राचीन और समृद्ध बौद्धिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें दर्शन, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, कला, खगोलशास्त्र, साहित्य और शासन जैसी विविध विधाओं का समावेश है एवं यह ज्ञान प्रणाली वेदों, उपनिषदों और शास्त्रों पर आधारित है भारतीय ज्ञान प्रणाली का मुख्य उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्ति

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
VOL. 3, ISSUE 5, NOVEMBER 2025
Available Online : http://shodhprakashan.in/

नहीं, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास और मानवता के कल्याण की दिशा में कार्य करना है। यह प्रणाली सत्य, अहिंसा, धर्म और प्रकृति के साथ सामंजस्य जैसे मूल्यों पर आधारित है। **गुरु–शिष्य परंपरा** भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है , जो भारतीय शिक्षा प्रणाली की आत्मा मानी जाती है। इस परंपरा में गुरु केवल शिक्षक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, प्रेरक और जीवन–दृष्टा होते हैं, जो शिष्य को अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाते हैं। योग विद्या अत्यंत प्राचीन है योग के प्राचीन ग्रंथों में गुरु शिष्य परंपरा का स्वरूप दिखाई पड़ता है जैसे शिव-पार्वती संवाद, ऋषि वशिष्ठ-श्रीराम संवाद, महर्षि घेरण्ड – राजा चंडकापाली संवाद, यमराज-नचिकेता संवाद, आदि क्रमशः शिव संहिता, योग वशिष्ठ, घेरण्ड संहिता, कठोपनिषद में वर्णित है।

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान प्रणाली भारत की प्राचीन और समृद्ध बौद्धिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें दर्शन, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, कला, खगोलशास्त्र, साहित्य और शासन जैसी विविध विधाओं का समावेश है। यह ज्ञान प्रणाली वेदों, उपनिषदों और शास्त्रों पर आधारित है तथा जीवन के भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक पहलुओं के बीच संतुलन पर बल देती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का मुख्य उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्ति नहीं, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास और मानवता के कल्याण की दिशा में कार्य करना है। यह प्रणाली सत्य, अहिंसा, धर्म और प्रकृति के साथ सामंजस्य जैसे मूल्यों पर आधारित है।

गुरु–शिष्य परंपरा

गुरु–शिष्य परंपरा भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है , जो भारतीय शिक्षा प्रणाली की आत्मा मानी जाती है। इस परंपरा में गुरु केवल शिक्षक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, प्रेरक और जीवन–दृष्टा होते हैं, जो शिष्य को अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाते हैं। गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा व्यक्तिगत, नैतिक और अनुभवात्मक होती थी, जिसमें अनुशासन, निष्ठा और आत्मिक विकास को विशेष महत्व दिया जाता था।

आधुनिक समय में भारतीय ज्ञान प्रणाली और गुरु–शिष्य परंपरा का पुनर्संयोजन शिक्षा को अधिक मानवीय, नैतिक और समग्र बना सकता है। यह प्रणाली वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ मूल्य–आधारित

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
VOL. 3, ISSUE 5, NOVEMBER 2025
Available Online : http://shodhprakashan.in/

जीवन शैली को भी प्रोत्साहित करती है। इन प्राचीन सिद्धांतों का आधुनिक शिक्षा में समावेश समाज के बौद्धिक और नैतिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

गुरु शिष्य परंपरा का तात्पर्य है उन गुरुओं की वंशावली का उल्लेख जिनके द्वारा समाज के उत्थान के लिए, ज्ञान का प्रकाश पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का कार्य किया गया। यह ज्ञान को आगामी पीढ़ियों तक आगे बढ़ाने के उद्देश्य से गुरु द्वारा शिष्य को हस्तांतरित करने की परंपरा है। भारतीय उपमहाद्वीप में प्रचलित रहे दर्शनशास्त्र के मुख्य ज्ञानपीठों में संचित ज्ञान के भंडारों को इसी पद्धति के माध्यम से जीवित रखा गया है।

भारतीय संस्कृति में **गुरु-शिष्य परम्परा** प्राचीन काल से चली आ रही है जिसमें गुरु अपना सम्पूर्ण ज्ञान शिष्य को प्रदान करने का प्रयत्न करते हैं। यह परम्परा हिन्दू, सिख, जैन और बौद्ध आदि भारत से उपजे सभी धर्मों में समान रूप से पायी जाती है। भारतीय परम्परा में शिक्षा दान का कार्य त्यागी लोगों ने किया। जब तक ऐसा रहा तब तक भारत का कल्याण हुआ।

'परम्परा' का शाब्दिक अर्थ है - 'बिना व्यवधान के शृंखला रूप में जारी रहना'। परम्परा-प्रणाली में किसी विषय या उपविषय का ज्ञान बिना किसी परिवर्तन के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ियों में संचारित होता रहता है।

गुरु परंपरा का महत्व

गुरु-शिष्य परंपरा यह सुनिश्चित करती है कि आने वाली प्रत्येक पीढ़ी तक ज्ञान का प्रकाश पहुंचता रहे। इस ज्ञान में मानसिक वेदनाओं को ठीक करने की शक्ति है, जिनसे कोई भी पीढ़ी अछूती नहीं रही है।

इस गुरु परंपरा के प्रत्येक गुरु ने अपने समय की पीढ़ी के लिए इस शाश्वत ज्ञान को प्रासंगिक बना कर प्रस्तुत किया है। प्रत्येक गुरु परंपरा ने विश्व को अपार योगदान दिया है। बड़े बड़े महान ग्रंथ इसी परंपरा से आए हैं। प्रत्येक परंपरा में गुरुओं का व्यक्तित्व अति प्रभावशाली और विलक्षण गुणों से भरपूर रहा। उनके स्मरण मात्र से ही उनके गुण हमारे सामने, चाहे थोड़े समय के लिए ही सही जीवंत हो उठते हैं।

गुरु का अर्थ- दो अक्षर से मिलकर बना है गु' शब्द का अर्थ है अंधकार (अज्ञान) और 'रु' शब्द का अर्थ है प्रकाश ज्ञान। अज्ञान को नष्ट करने वाला जो ब्रह्म रूप प्रकाश है, वह गुरु है। आश्रमों में गुरु-शिष्य परम्परा का निर्वाह होता रहा है। भारतीय संस्कृति में गुरु को अत्यधिक सम्मानित स्थान

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
VOL. 3, ISSUE 5, NOVEMBER 2025
Available Online : http://shodhprakashan.in/

प्राप्त है। भारतीय इतिहास में गुरु की भूमिका समाज को सुधार की ओर ले जाने वाले मार्गदर्शक के रूप में होने के साथ क्रान्ति को दिशा दिखाने वाली भी रही है। भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊपर माना गया है.

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥ - कर्मकांड भास्कर

प्राचीन काल में गुरु और शिष्य के संबंधों का आधार था गुरु का ज्ञान, मौलिकता और नैतिक बल, उनका शिष्यों के प्रति स्नेह भाव, तथा ज्ञान बांटने का निःस्वार्थ भाव. शिक्षक में होती थी, गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा, गुरु की क्षमता में पूर्ण विश्वास तथा गुरु के प्रतिपूर्ण समर्पण एवं आज्ञाकारिता अनुशासन शिष्य का सबसे महत्वपूर्ण गुण माना गया है

शिष्य एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है "विद्यार्थी" या "शिक्षार्थी"। शिष्य वह व्यक्ति होता है जो किसी गुरु या शिक्षक से ज्ञान, शिक्षा या दीक्षा प्राप्त करने के लिए उनके मार्गदर्शन में रहता है। शिष्य का मुख्य उद्देश्य अपने गुरु से शिक्षा को ग्रहण करना और अपने जीवन में उनका पालन करना होता है

शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण और आस्था ज्ञान की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारतीय परंपरा में शिष्य को ज्ञान प्राप्ति के लिए विनम्रता और सेवा भाव का पालन करने की आवश्यकता होती है। शिष्य और गुरु के बीच का संबंध ज्ञान के आदान-प्रदान पर आधारित होता है।

आचार्य चाणक्य ने एक आदर्श विद्यार्थी के गुण इस प्रकार बताये हैं –

काकचेष्टा बको ध्यानं श्वाननिद्रा तथैव च ।

अल्पहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पञ्चलक्षणम् ॥

काकचेष्टा (कौए जैसा प्रयत्न)

विद्यार्थी को कौए की तरह निरंतर जिज्ञासु, सतर्क और प्रयासरत होना चाहिए।

लक्ष्य प्राप्ति तक लगे रहने का गुण।

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
VOL. 3, ISSUE 5, NOVEMBER 2025
Available Online : http://shodhprakashan.in/

बकध्यानम् (बगुले जैसा एकाग्र ध्यान)

जिस प्रकार बगुला पानी में घंटों स्थिर होकर शिकार पर ध्यान लगाता है,

उसी तरह विद्यार्थी को पढ़ाई में गहरी एकाग्रता रखनी चाहिए।

श्वाननिद्रा (कुत्ते जैसी हल्की नींद)

विद्यार्थी को हल्की और सजग नींद का अभ्यास रखना चाहिए ताकि समय पर उठना,

अध्ययन और दिनचर्या का पालन संभव हो।

अल्पहार (कम भोजन)

अत्यधिक भोजन आलस्य लाता है।
संतुलित और हल्का भोजन मन और शरीर दोनों को पढ़ाई योग्य बनाता है।

ब्रह्मचार्य (आत्मसंयम)

मन, वचन और कर्म में संयम।

समय, ऊर्जा और विचारों को अध्ययन की दिशा में लगाना।

गुरु और शिष्य के बीच केवल शाब्दिक ज्ञान का ही आदान प्रदान नहीं होता था बल्कि गुरु अपने शिष्य के संरक्षक के रूप में भी कार्य करता था। उसका उद्देश्य रहता था कि गुरु उसका कभी अहित सोच भी नहीं सकते. यही विश्वास गुरु के प्रति उसकी अगाध श्रद्धा और समर्पण का कारण रहा है।

अद्वैत गुरु परंपरा

अद्वैत गुरु परंपरा उन गुरुओं की वंशावली है जो अद्वैत के पवित्र दर्शन शास्त्र को मानते आये हैं। प्रसिद्ध गुरुजन, जैसे आदि शंकराचार्य, वेद व्यास जी तथा महर्षि वशिष्ठ जी इसी परंपरा में आते हैं। उनके महान योगदान ने ही सदियों से चले आ रहे इस अद्वैत ज्ञान को जीवित रखा है। इसी परंपरा के कारण ही उपनिषदों , भगवत् गीता व कई अन्य ज्ञान के स्रोतों में निहित ज्ञान उनके आगे आने वाली पीढ़ियों में हस्तांतरित हुआ है तथा इसकी बदौलत अनेकों को आध्यात्मिक अनुभव हुए हैं।

महर्षि वशिष्ठ मानव जाति के सर्वाधिक प्रबुद्ध, अभिज्ञात प्राणी। ऋषि वशिष्ठ ने भगवान श्री राम को ज्ञान दिया कि संसार में अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए स्वयं को केंद्रित और समदर्शी/

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
VOL. 3, ISSUE 5, NOVEMBER 2025
Available Online : http://shodhprakashan.in/

समबुद्धि कैसे रखें। ऋषि वशिष्ठ और श्री राम के बीच हुए संवाद को संसार की मायावी प्रकृति पर रचित एक ग्रंथ, "योग वशिष्ठ" के रूप में संजोया गया है।

ऋषि व्यास भारतीय उपमहाद्वीप में घूम घूम कर भिन्न भिन्न मतों के ऋषि-मुनियों से मिले और उनसे वेदों के ज्ञान को एकत्र किया । व्यास जी को वेदों की शाखाओं का ज्ञान था। उन्होंने उपनिषद योगसूत्र, व्यासभाष्य तथा श्रीमद् भागवत् की रचना भी की। महाभारत, भगवत् गीता का एक अंग है

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार **उपनिषद शब्द की व्युत्पत्ति उप (निकट), नि (नीचे), और षद (बैठो) से है।** इस संसार के बारे में सत्य को जानने के लिए शिष्यों के दल अपने गुरु के निकट बैठते थे। उपनिषदों का दर्शन वेदान्त भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है वेदों का अन्त। इनमें मुख्यत शिष्य की जिज्ञासा को गुरु के द्वारा पूर्ण किया गया है|ज्ञान से सम्बन्धित समस्याओं पर विचार किया गया है।

(a) छान्दोग्य उपनिषद

- उद्दालक ऋषि और श्वेतकेतु का संवाद (अध्याय 6)
- गुरु द्वारा ब्रह्मविद्या का साक्षात् शिक्षण

(b) कठोपनिषद

- नचिकेता और यमराज का गुरु–शिष्य संवाद

(c) मुण्डक उपनिषद

- शौनक और अंगिरस का ज्ञान-संवाद
- शिष्य को **"समित्पाणिः"** (समर्पण भाव से) गुरु के पास जाना चाहिए।

ये संवाद गहन आध्यात्मिक ज्ञान और जीवन के रहस्यों पर आधारित हैं। जिसके द्वारा योग के पहलुओ को समझ जा सकता है|

"प्रणिपातेन, परिप्रश्नेन, सेवया" -श्रीमद्भगवद् गीता (4.34)

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
VOL. 3, ISSUE 5, NOVEMBER 2025
Available Online : http://shodhprakashan.in/

अर्थात् नम्रता, जिज्ञासा और सेवा ही वास्तविक शिक्षा के आधार हैं।

श्रीमद्भगवद् गीता में भगवान **श्रीकृष्ण** ने गुरु-शिष्य परम्परा को 'परम्पराप्राप्तम योग' बताया है। गुरु-शिष्य परम्परा का आधार सांसारिक ज्ञान से शुरू होता है,परन्तु इसका चरमोत्कर्ष आध्यात्मिक शाश्वत आनन्द की प्राप्ति है, जिसे ईश्वर-प्राप्ति व मोक्ष प्राप्ति भी कहा जाता है। बड़े भाग्य से प्राप्त मानव जीवन का यही अंतिम व सर्वोच्च लक्ष्य होना चाहिए।

उदाहरण-श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवाद

घेरण्ड संहिता में घेरण्ड मुनि और उनके शिष्य राजा चंडकापालि के बीच संवाद का उल्लेख मिलता है। यह संवाद एक गुरु-शिष्य संवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें राजा चंडकापालि घेरण्ड मुनि से योग के विभिन्न पहलुओं के बारे में प्रश्न पूछते हैं और घेरण्ड मुनि उन्हें विस्तार से उत्तर देते हैं जो की हठयोग शिक्ष पर आधारित है|

राजा चंडकापालि योग की उच्चतम साधनाओं और सिद्धियों के बारे में जानने के इच्छुक होते हैं। वे घेरण्ड मुनि से पूछते हैं कि शरीर, मन और आत्मा की शुद्धि कैसे की जा सकती है और योग की पूर्णता कैसे प्राप्त की जा सकती है|

घेरण्ड मुनि उन्हें बताते हैं कि योग की साधना सात चरणों में विभाजित है, जिन्हें 'सप्तसाधन' कहा जाता है। ये सात चरण हैं:

1. षटकर्म (शोधन क्रियाएं) – शरीर और मन की शुद्धि के लिए।
2. आसन – शरीर को स्थिर और शक्तिशाली बनाने के लिए।
3. मुद्रा – ऊर्जा के प्रवाह को नियंत्रित और स्थिर करने के लिए।
4. प्रत्याहार – इन्द्रियों का नियंत्रण और अंतर्मुखी करना।
5. प्राणायाम – श्वास और प्राण ऊर्जा का नियंत्रण।
6. ध्यान – मन की एकाग्रता और ध्यान केंद्रित करना।
7. समाधि – आत्मसाक्षात्कार और परमात्मा के साथ एकत्व की अवस्था

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
VOL. 3, ISSUE 5, NOVEMBER 2025
Available Online : http://shodhprakashan.in/

शिव संहिता के अनुसार

शिवसंहिता एक महत्वपूर्ण योग ग्रंथ है, जिसमें भगवान शिव और देवी पार्वती के बीच का संवाद शामिल है। इस ग्रंथ का मुख्य उद्देश्य योग के सिद्धांतों और प्रथाओं को समझाना है। शिव संहिता में भगवान शिव देवी पार्वती को योग विद्या के विभिन्न पहलुओं का ज्ञान देते है।

भगवान शिव योग के महत्व पर बल देते हुए बताते हैं कि योग का उद्देश्य आत्मज्ञान प्राप्त करना और परमात्मा से एकत्व की अनुभूति करना है। योग ही वह मार्ग है जो आत्मा को शुद्ध करता है और जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति दिलाता है।

योग के चार मुख्य प्रकार

मंत्र योग- मंत्रों के जप और ध्यान के माध्यम से आत्मा का शुद्धिकरण।

लय योग-ध्यान और मानसिक स्थिरता के माध्यम से परमात्मा से एकत्व की प्राप्ति।

हठ योग-शारीरिक और मानसिक शुद्धि के लिए आसन, प्राणायाम, और शुद्धिकरण क्रियाओं का अभ्यास।

राज योग- ध्यान के माध्यम से आत्म-साक्षात्कार की प्राप्ति।

शरीर और चक्र,प्राणायाम,ध्यान और समाधि

आदि शंकराचार्य

आदि शंकराचार्य ने अपने गुरु गोविंद भगवत्पाद से वेदांत का ज्ञान प्राप्त किया और पूरे भारत में वेदांत का प्रचार किया। उनके शिष्य मंडन मिश्र और अन्य ने उनकी शिक्षाओं का प्रसार किया।

वर्तमान युग की सातवीं सदी में आदि शंकराचार्य अपने गुरु गोविंद भगवद पाद जी से नर्मदा नदी के तट पर मिले, जिसे आज हम मध्य प्रदेश के रूप में जानते हैं। जिन्होंने अद्वैत दर्शन को पुनर्जीवित किया|

स्वामी विवेकानंद और रामकृष्ण परमहंस: स्वामी विवेकानंद और उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस का संबंध भी गुरु-शिष्य परंपरा का एक आदर्श उदाहरण है। रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानंद को आत्मज्ञान और सेवा का मार्ग दिखाया, जिससे वे विश्व प्रसिद्ध संत बने।

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
VOL. 3, ISSUE 5, NOVEMBER 2025
Available Online : http://shodhprakashan.in/

निष्कर्ष

आधुनिक समय में भी गुरु-शिष्य परंपरा का महत्व बना हुआ है, हालांकि इसके रूप में कुछ परिवर्तन हुए हैं। जो कि शिक्षक एवं विद्यार्थी के रूप मे देखा जा रहा है, अब यह परंपरा विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, और अन्य शिक्षण संस्थानों के माध्यम से भी जारी है।

आध्यात्मिक गुरुओं के मार्गदर्शन में आज भी लोग योग, ध्यान, और अन्य आध्यात्मिक प्रथाओं में दीक्षा लेते हैं। योग मे कहा गया है की बिना गुरु के योग की विद्या दुर्लभ है अतः योग को जीवन में अपनाने के लिए गुरु होना बहुत ही आवश्यक है कहा गया है कि बिना गुरु के ज्ञान नहीं होता और बिना ज्ञान के मोक्ष भी नहीं हो सकता है यह भी देखा गया है की गुरु के स्पर्श मात्र से कई अलौकिक शक्तियां शिष्य को प्राप्त हो जाती हैं सिर्फ गुरु पात्रता देखता है इसके कई प्रत्यक्ष उदाहरण भी हैं और यह भारत मे ही अधिकतम देखा गया है गुरु-शिष्य परंपरा की मर्यादा को जीवन पर्यंत बनाए रखने के लिए गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है। इस दिन शिष्य अपने गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं और उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

गुरु-शिष्य परंपरा न केवल शिक्षा का एक माध्यम है, बल्कि यह एक आध्यात्मिक यात्रा है जहां गुरु शिष्य को आत्मज्ञान की दिशा में मार्गदर्शन करता है। यह परंपरा भारतीय संस्कृति का एक अनमोल हिस्सा है जो आज भी जीवित और प्रासंगिक है।

संदर्भ

- सरस्वती स्वामी निरंजनानन्द (२०११), घेरण्ड संहिता, मोन पब्लिकेशन इस्ट, मुंगेर, बिहार, भारतु 18 HN: 978-81-86336-33-9
- झा पीताम्बर, दिगम्बरजी स्वामी (२०१७), हठपदीपिका, कैवल्यधाम स्वामी कुवलयानन्द मार्ग, लोनावाला, पुणे, महाराष्ट्र 18N: 978-818-918-51223.
- विचार सलपाल (२०१८), ह्ठ रत्नावली, ओमश्री विवाइन पहिलकेशन, सिरसा, हरियाणा ISBN: 978-81-933966-3-4
- कुमार प्रवीण, बाली रजनी, प्रीतम अमृता (२००७), योग परिचय एवं परम्परा,खेल साहित्य केन्द्र, नईदिल्ली ISBN 81-7534-474-7

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
VOL. 3, ISSUE 5, NOVEMBER 2025
Available Online : http://shodhprakashan.in/

- सिंह रामहर्ष (२०१७), स्वस्थवृत्त विज्ञान, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्लीISBN: 978-81-7084-038-1
- सरस्वती स्वामी सत्यानन्द (२०१२), आसन प्राणायाम मुदा बन्ध, योग पब्लिकेशन ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत ISBN: 978-81-86836-18-4
- गोयंदका, हरीकृष्ण, (सं. 2074), ईशदि नौ उपनिषद, गीता प्रेस गोरखपुर